BA-III (H)
मैथिली
पेपर - छठ

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

पत्रहीन नग्न गाछ
(Lecture - One)

पिता-पुत्र संवाद

पत्रहीन नग्न गाछ मे संकलित 'पिता-पुत्र संवाद' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' द्वारा लिखल गेल अछि। यात्रीजीक ई कविता जे आधुनिक साहित्यिक विवाद पर आधारित अछि। एहि रचना सबमे नवीन कविता - अकविताक कवि-व्याख्यता लोकनिक प्रवृतिक आलोचना कैलनि अछि। एहि कविता मे ऊपरसँ हास्य-विनोद स्पष्ट अछि जे शिव स्वयं अपन पुत्र गणेश सँ किछु प्रश्न करैत छथि आ

गणेशा स्वयं प्राय: जीवितहु शिवकें उत्तर देवाक स्थान पर जे कहैत छथि तहिलें चीता 'मौन गम्भीर निरपेक्ष भ 'जाग्रत छथिन्ह एहिमे शिव परिवारक एक सुन्दर सचि-त्तार झाँकी भेटैत अछि, संगहि कैलाशक सुन्दर प्रकृति भेटैत अछि। एहि सम्पूर्ण कविताक केन्द्र दार्शनिक भाव-विचार भ' गेल अछि। कवि कहि रहल अछि —

" प्रिय वटुक, कुशल अछि अहाँ कें
की बिकइ कुंठा ?
की बिकइ संत्रास
की बिकइ मृत्युबोध ?"

अल्पजीवी लघुप्राण व्यक्ति भेटल अछि अहाँ के ?"

एतय जे प्रश्न गणेशासँ पूछल गेल अछि, तकर उत्तर एहि कवितामे नहि देल गेल अछि। कुंठा, संत्रास, मृत्युबोध, आक्रोश लघुप्राण व्यक्तिसँ भेंट ? समाधिस्थ शिव मानवक दिशा वा जड़ जीवक दिशा तकताथि सौं समाधिमें भंग भ जेतनि। शिव त 'समाधिये मे समस्तकें

आत्मसात केनाहि छथि। ओ कल्याण करैतहि छथि। प्रिय पुत्र श्री गणेशसँ उत्तर नहि भेटला आछि तखन मौन गंभीर निरपेक्ष भ गेल छथि। स्वयं ब्रह्मकें (शिवके) गणेश कहैत छथि।

यथा – " हिमालय केँ तुंग शृंग छोड़ि, नीचाँ तराइ दिशा ताकियो ना हैत ?"

श्री गणेश स्वयं ब्रह्म (शिव) कँ कहैत छथि हमरा सँ जे प्रश्न करैत छी से आहाँकें नीचा तराइ दिशा ताकियो ना हैत। गणेश शिवक कोरासँ उतरिकँ प्रश्न करैत छथि। श्री गणेशके ई प्रश्नोत्तर सुनि के पार्वती माय बजलीह।

यथा – " अहुना केओ ठाँहि-पठाँहि बापकेँ देलक आछि, जाउ छोटन, श्री छवि आहाँके — अपन जेठ मायसँ किछुओ त सिखने रहितहुँ।"

मायकेँ कने अनसोहाँत सन लगलनिह जे गणेश बापकेँ ठाँहि-पठाँहि जवाब देलनिह। माय पार्वती सर्वशक्तिमयी सृष्टि स्थिति संहारकारिणी छथिन्ह। देवगनक सेनापति कार्तिकेय, षडानन अनुशासित, पितृभक्त छथि।

(५)

यहि कविताके दार्शनिकता देखाअोलछोल छैक। पिता-पुत्र बीचक संग व्यक्ति, परिवार एवं मानवजाति समाजलेल, अाअो अाध्यात्मिकताक प्रभावी ~~एवंक~~ संदेशवाली अछि।

= समाप्त =

Samrat
२५।०५।२०